वैश्विक शक्ति के रूप में भारत — (B.A. III)

21 वीं सदी के पूर्वार्द्ध में आज भारत विश्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण देशों में गिना जाता है। 1991 में LPG नीति के प्रारम्भ होने के बाद भारत ने विज्ञान, तकनीक, अर्थव्यवस्था, आधारभूत संरचना आदि के क्षेत्रों में सराहनीय प्रगति की है। प्राचीन तथा मध्यकाल में भारत विश्व के सर्वाधिक समृद्ध देशों में से एक था। किन्तु औपनिवेशिक शोषण के कारण भारत को अनेक समस्याएं झेलनी पड़ी तथा वह पाश्चात्य देशों की तुलना में बहुत पिछड़ गया। वर्तमान समय में अमेरिका, यूरोपियन यूनियन, चीन आदि ज्यादा बेहतर स्थिति में हैं तथा उनकी गणना वैश्विक शक्तियों के रूप में की जाती है।

जहाँ तक भारत का प्रश्न है, हमारे समक्ष अनेक सम्भावनाएं तथा चुनौतियां विद्यमान हैं। वर्तमान समय में भारत जनांकिकीय लाभांश स्थिति में है तथा देश की अपनी युवा आबादी से अनेक आशाएं हैं। वैश्विकरणजनित अवसरों, लोकतांत्रिक परम्परा, अंग्रेजी में दक्षता आदि के कारण भारतीय युवा पूरे विश्व में अपनी पहचान स्थापित कर रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी में अपनी दक्षता के कारण भारतीय युवा विश्वभर में कुशल पेशेवरों की माँग पूरी कर रहे हैं। फार्मास्युटिकल्स के क्षेत्र में भारत ने महत्वपूर्ण प्रगति की है तथा अनेक निर्धन एवं अल्पविकसित देशों को उचित मूल्य पर महत्वपूर्ण औषधियाँ उपलब्ध करा रहा है।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत के 'इसरो' ने विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान बनायी है। इसरो ने अत्यल्प संसाधनों एवं बिना के बल पर ही कुशल तथा विश्वस्तरीय तकनीकें विकसित की हैं। चंद्रमान-1 के द्वारा चंद्रमा पर जल की उपस्थिति की पुष्टि हुई। प्रथम प्रयास में ही मंगल पर अपना यान भेजने वाला इसरो विश्व की प्रथम स्पेस एजेंसी बना। शीघ्र ही भारत अंतरिक्ष में मानवयान भेजने की योजना भी बना रहा है। इन्हीं उपलब्धियों के कारण फ्रांस, जापान, यू. एस. ए. आदि देश भारत के साथ अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने को लालायित हैं।

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत एवं धार्मिक सहिष्णुता तथा विविधता को पूरे विश्व में प्रशंसनीय दृष्टि से देखा जाता है। विश्व भर में फैले करोड़ों भारतवंशी इस विरासत के प्रचारक हैं। भारतीयों की योग्यता तथा मिल-जुल कर रहने की विशेषता के कारण भारतीयों की एक अलग छवि बनी है। भारतीय फिल्मों ने भी देश की सभ्यता, संस्कृति, विचारों आदि से विश्व को परिचित कराया है तथा अनेक विदेशी भी आज भारतीय संस्कृति व परम्परा से लगाव महसूस करते हैं।

Scanned with CamSc

यह उल्लेखनीय है कि अपने उर्वर तथा विविधतापूर्ण भू-भाग और प्राकृतिक संसाधनों के कारण भारत को अनेक सुविधाएँ प्राप्त हैं। भारत कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भर है तथा खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में तेजी से प्रगति कर रहा है। अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण भारत सौर ऊर्जा का बड़े पैमाने पर प्रयोग कर सकता है तथा तकनीकी विकास के बाद ऊर्जा के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर बन सकता है। वस्तुतः वैश्विक शक्ति बनने के लिए स्वनिर्भरता अति आवश्यक है और भारत तेजी से इस दिशा में कदम बढ़ा रहा है।

भारत ने विश्व बैंक की 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' रिपोर्ट में 23 स्थानों की छलांग लगाते हुए 77वाँ स्थान हासिल किया। I.M.F. के अनुमानों के अनुसार भारत फ्रांस को पीछे छोड़ते हुए विश्व की 6 वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है तथा वर्ष 2030 तक इसके अमेरिका, व चीन के बाद तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने की सम्भावना है। ये आँकड़े बताते हैं कि भारत वैश्विक महाशक्ति बनने की ओर निरन्तर प्रगति कर रहा है।

आर्थिक के साथ ही सैन्य तथा प्रतिरक्षा क्षेत्र में भी भारत ने महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। हिन्द महासागर के शीर्ष पर स्थित भारत की भू-रणनीतिक एवं भू-सामरिक स्थिति भी बहुत महत्वपूर्ण है। डोकलाम विवाद में भारत ने भूटान के पक्ष में जिस तरह की दृढ़ता का प्रदर्शन किया, उससे भी भारत की छवि एक मजबूत राष्ट्र की बनी है। यही कारण है कि आज अमेरिका, जापान, फ्रांस, रूस, इजराइल आदि प्रमुख देश भारत के साथ सामरिक क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने को उत्सुक हैं। अमेरिका की 'पाइवोट टू एशिया' नीति भी भारत के सहयोग पर टिकी है। यह वैश्विक शक्ति के रूप में भारत के बढ़ते महत्व का परिचायक है।

भारत ने अपनी बढ़ती स्वीकार्यता को बखूबी संभाला है। विशेष रूप से पड़ोसी देशों के साथ संलग्नता में वृद्धि हुई है। 'नेबरहुड फर्स्ट' की नीति कारगर रही है। आज नेपाल तथा बांग्लादेश भारत के रेल नेटवर्क से जुड़ चुके हैं। 'बिम्सटेक' के द्वारा भारत ने दक्षिण एशियाई क्षेत्र में सहयोग को बढ़ाने का प्रयत्न किया है। वैश्विक स्तर पर अपनी भूमिका बखूबी निभाने के लिए देश में आन्तरिक स्तर पर भी अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाये गए हैं। भारत नेट, उड़ान, भारतमाला आदि योजनाओं द्वारा आधारभूत संरचना को सशक्त बनाने का प्रयास किया जा रहा है। 'आधार' के प्रयोग द्वारा व्यक्ति की पहचान सुनिश्चित की जा सकती है तथा 'आयुष्मान भारत' के द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुँच का प्रयास किया जा रहा है।

भारत के समक्ष चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ — भारत के वैश्विक महाशक्ति बनने का मार्ग सर्वथा निरापद नहीं है। भारत के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ इसप्रकार हैं——

Scanned with CamScanner

① भारत के समक्ष सबसे बड़ी समस्या अपनी विशाल जनसंख्या को कार्यकुशल बनाने तथा इसके जीवन स्तर में सुधार लाने की है। 'UNDP' द्वारा जारी मानव विकास सूचकांक में भारत की रैंकिंग 130 रही है तथा भारत मध्यम मानवविकास वाले देशों में शामिल है। विश्व के लगभग एक तिहाई निर्धन भारत में रहते हैं तथा भारत भूख तथा कुपोषण जैसी समस्याओं से ग्रस्त है। चाइल्ड स्टंटिंग तथा वेस्टिंग भारत में एक बड़ी समस्या है जबकि खाद्य भण्डारों में अनाज रखने की जगह नहीं है। इसके अलावा कर्ज तथा फसलों के उचित मूल्य न मिलने से निराश किसान आत्महत्या तक करने को अभिशप्त हैं। इसलिए संसाधनों का न्यायपूर्ण व तार्किक वितरण तथा विषमता को समाप्त करना भारत के समक्ष एक बड़ी चुनौती है तथा वैश्विक शक्ति बनने के लिए इसका निदान आवश्यक होगा।

② व्यापक भ्रष्टाचार एक अन्य चुनौती है। हालाँकि सूचना के अधिकार, सिटिजन चार्टर, कम्प्यूटरीकरण आदि के कारण इस पर कुछ अंकुश लगा है किन्तु हितों के टकराव, रिश्वतखोरी आदि को अभी प्रभावी रूप से समाप्त नहीं किया जा सका है। इसके कारण वंचित वर्ग के लोगों तक योजनाओं का लाभ उचित तरीके से नहीं पहुँच पाता है। बैंकों के बढ़ते N.P.A. के रूप में भी हम सर्वव्यापी भ्रष्टाचार को देख सकते हैं। विजय माल्या, नीरव मोदी आदि के मामलों से यह स्पष्ट है कि हमारी वित्तीय प्रणाली अभी भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं बन सकी है तथा इसमें विद्यमान विसंगतियों का फायदा भ्रष्टाचारी तत्व उठाते रहते हैं।

③ 'प्रतिस्पर्द्धा आयोग' के गठन के बावजूद अभी भी स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा कायम करना बाकी है। 'क्रोनी कैपिटलिज्म' का प्रभाव भारत में भी देखा जा सकता है तथा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शासन की नीतियों को प्रभावित करने का प्रयास भी होता रहता है। भारत की आधारभूत संरचना भी अभी विश्व स्तरीय नहीं बन सकी है तथा भौगोलिक आधार पर भी इसमें काफी अन्तर है। उदाहरण के लिए दक्षिणी व पश्चिमी राज्यों में बेहतर अवसंरचना है तो वहीं उत्तर तथा पूर्वोत्तर के राज्यों में अनेक स्थानों पर आधारभूत सुविधाओं का भी अभाव है। इससे भारत का आर्थिक विकास प्रभावित होता है तथा भारत के वैश्विक महाशक्ति बनने का स्वप्न खंडित होता है।

④ भारत ने तकनीक के अनेक क्षेत्रों में प्रगति की है किन्तु विज्ञान की शिक्षा तथा शोध का स्तर अभी भी असंतोषजनक है। खासकर भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले विज्ञान के नये क्षेत्रों हेतु अभी हमारा देश तैयार नहीं है। यथा 'आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स' को भविष्य में 'गेमचेंजर' के रूप में देखा जा रहा है। किन्तु अभी भारत में इस क्षेत्र में शोध तथा नवाचार की गति बहुत धीमी है। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में भी व्यापक भौगोलिक व संकायगत विषमता है। यदि भारत को वैश्विक शक्ति बनना है तो एक आधुनिक तथा स्वीकृत शिक्षा नीति के तहत शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन लाना ही पड़ेगा।

Scanned with CamSc

(5) भारत में नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों को संविधान में शामिल किया गया है। लेकिन वे प्रभावी रूप नहीं ले पाये हैं। प्रतिदिन के जीवन में नागरिक भावना का अभाव दिखायी देता है। लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रहे हैं लेकिन उनका कर्तव्य बोध तिरोहित होता जा रहा है। सार्वजनिक स्थानों पर गन्दगी फैलाना, सार्वजनिक सम्पत्ति का अपव्यय प्रदूषण फैलाना, कानफोड़ू संगीत बजाना, तेज आवाज वाले पटाखे जलाना आदि कार्यों से स्पष्ट होता है कि लोगों को दूसरों की बिलकुल भी परवाह नहीं है। जबकि वैश्विक शान्ति बनने के लिए लोगों का अपनी भाईचारा तथा एक-दूसरे से सहयोग बहुत महत्वपूर्ण होगा।

निष्कर्ष - (Conclusion)

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि वैश्विक महाशक्ति बनने की सम्भावनाएं भारत के भीतर हैं तथा देश ने इस दिशा में प्रगति भी की है। लेकिन इस मार्ग में अनेक चुनौतियाँ भी हैं तथा अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। यदि भारत संसाधनों का न्यायपूर्ण व तार्किक वितरण कर सके और अपनी जनसंख्या को दक्ष और खुशहाल बना सके तो यह वैश्विक महाशक्ति बन सकता है।

Scanned with CamSc